डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

स्कूली शिक्षा की पाठ्यचर्या में मूल्य शिक्षा का समावेशन

शोधपत्र-शिक्षा

* डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

वर्तमान युग में मानव जाति विकासात्मक संक्रान्ति से गुजर रही है। समय के साथ मूल्य भी परिवर्तित हो रहे है। मूल्य सिखाने संस्कार देने वाली शिक्षा की आज सर्वज्ञ आवश्यकता है। यदि शिक्षा मनुष्य को आदर्श मानव नही बनाती तो वह किस काम की आज नैतिकता की नितान्त आवश्यकता है, क्योंकि मूल्यों का हर स्थान पर पतन हो रहा है। उक्त स्थिति में आज मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता को अनुभूत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है हमको यह समझ में आ गया है मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के अभाव में शिक्षा में गुणात्मक सुधार की आशा एक मृगमरीयिका ही सिद्ध होगी। अतः भारत के कर्णधारों ने नई शिक्षा नीति में इस ओर अपेक्षित ध्यान दिया इसीलिये कहा गया है– सभी प्रकार के विचारशील लोग मूल्यों के तेजी से हो रहे ह्रास तथा उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक जीवन में व्याप्त प्रदूषण के अधिक विक्षुब्ध है। वास्तव में मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति जिस प्रकार जीवन के अन्य अंगों में व्याप्त है, उसी प्रकार स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों, छात्रों तथा शिक्षकों में व्याप्त है। पिछले अनुभवों से सीखते हुए यह आशा की जाती है कि सुसंगत तथा व्यवहार मूल्य प्रणाली को ऐसी प्रक्रियाओं के माध्यम से लागू किया जाये जो जीवन के प्रति तर्क संगत वैज्ञानिक तथा नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित हों।

आज के विश्व में मनुष्य के आचरण में तेजी से आती हुई नैतिक गिरावट तथा अशांति के वातावरण को देखकर प्रायः सभी प्रबुद्ध विचारक चिंतित है। दैनिक अवमूल्यन के साथ–साथ हमारी आस्थाऍं विखंडित हो रही है। सामाजिक विघटन हो रहा है, परिवार छिन्न–भिन्न हो रहे है। चारों ओर अपराध और युद्धो का वातावरण बना हुआ है। शिक्षा विश्व में शांति एवं मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा इन समस्याओं को दूर करने का तरीका है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया है कि ''हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक जातिवाद, हिंसा अन्धविश्वास व भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नही है, उसकी मूल्यपरक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भ से जुड़ी होनी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातंत्र, स्वतंत्रता, बंधुत्व, समाजवाद तथा धर्म निरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा सभी स्तरों के लिये आवश्यक है। प्रारम्भिक स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा अन्य उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं मूल्यों की तार्किकता को समझ उन्हे विचार व कार्य रूप में ढाल सकेंगे।''

स्वतंत्रता पश्चात विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) से लेकर दसवीं पंचवर्षीय योजना तक अनेक आयोगों समितियों एवं नीतियों में शिक्षा को मूल्य आधारित कर मानव चेतना विकासोन्मुखी करने की आवश्यकता पर बल दिया है। मूल्यों को धार्मिक, आध्यात्मिक नैतिक अथवा सामाजिक मूल्यों के नाम से वर्णित किया गया है। उदाहरणार्थ भारतीय विश्वविद्यालय आयोग (1948–1949) में धार्मिक शिक्षा शब्द का उपयोग किया। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने चरित्र की शिक्षा, शीर्षक के अंतर्गत धार्मिक तथा नैतिक निर्देश एवं भारतीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक बहुआयामी समाज में सार्वभौम एवं सार्वकालिक मूल्यों द्वारा देश एवं समाज में एकता एवं अखण्डता की स्थापना की आवश्यकता पर जोर दिया गया। शिक्षा नीति के अनुसार मानवीय मूल्यों की शिक्षा रहस्यवाद, धर्मान्धता, हिंसा एवं अन्धविश्वास से पूर्णतया मुक्त करने वाली तथा वैज्ञानिक, दर्शन आधारित, व्यवहारिक तथा अनिवार्य प्रयोग एवं परिणाम द्वारा मूल्यांकन आधारित होनी चाहिए।

मानवीय मूल्यों की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्वयन योजना (1942) की महत्वपूर्ण दिशा है। मूल्य

* सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय बरकतउल्लाह, विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

आधारित शिक्षा की 81वीं रिपोर्ट (चव्हान कमेटी पार्लियामेन्ट्री स्टेंडिंग) (कमेटी ऑन वैल्यू एजूकेशन) जो राज्यसभा के समक्ष दिनांक 26 जनवरी 1999 को प्रस्तुत की गई, इनमें शिक्षा में मूल्यों के समावेशन पर पिछले चार दशकों में प्रगति पर असंतोष जाहिर करते हुए शिक्षा को सार्वभौम मानवीय मूल्यों के सापेक्ष तथा मूल्य आधारित बनने पर बल दिया गया।

विद्यालय में विद्यार्थियों को जो कुछ भी कक्षा एवं कक्षा के बाहर प्रदान किया जाता है, उसका एक निश्चित उद्देश्य होता है एवं उसे किसी विशेष माध्यम से ही पूरा किया जाता है। हमारी कुछ संकल्पनाएँ होती है कि एक विशेष कक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद विद्यार्थी के व्यवहार में अमुक परिवर्तन आ जायेगा, किन्तु यह परिवर्तन किस प्रकार लाया जायेगा, किसके द्वारा लाया जायेगा तथा कितना लाया जायेगा आदि अनेक प्रश्न है जिनका समाधान पाठ्यक्रम जैसे :— साधन से प्राप्त होता है। पाठ्यक्रम का संबंध शिक्षा के अपौचारिक माध्यम से है। पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी भाषा के करीक्यूलम शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'करीक्यूलम' शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी में लिया गया है तथा यह लैटिन शब्द 'कुर्रेर' से बना है। 'कुर्रेर' का अर्थ है 'दौड़ का मैदान।' दूसरे शब्दों में 'करीक्यूलम' वह क्रम है जिसे किसी व्यक्ति को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए पार करना होता है। अतः पाठ्यक्रम यह वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यह अध्ययन का निश्चित एवं तर्कपूर्ण क्रम है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थीके व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह नवीन ज्ञान एवं अनुभव को ग्रहण करता है।

पाठ्यक्रम के अर्थ को और अच्छी तरह समझने के लिए हमें शिक्षा के विकास पर भी एक दृष्टि डालनी आवश्यक है। आदिकाल में शिक्षा का स्वरूप पूर्णतया अनौपचारिक होता था अर्थात शिक्षा किसी विधि एवं क्रम से बँधी हुई नहीं थी। उस समय बालकों की शिक्षा उनके परिवार एवं समाज की जीवनचर्या के मध्य चलती रहती थी तथा बालक उसमें भागीदार बनकर प्रत्यक्ष अनुभव एवं निरीक्षण के माध्यम से तथा अपने बड़ों एवं पूर्वजों के अनुभव सुनकर शिक्षा प्राप्त करता था, किन्तु सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव के ज्ञान राशि के संचित कोष में निरन्तर वृद्धि होती गई तथा मनुष्य के जीवन में जटिलताएँ एवं विधिताएँ आती गई। परिणामस्वरूप व्यक्ति के पास समय और साधन का अभाव होने लगा तथा उसकी शिक्षा अपूर्ण रहने लगी। अतः प्रत्येक विकासशील समाज ने अपने बालकों को समुचित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से इसे विधिवत् एवं क्रमबद्ध बनाने के प्रयास प्रारम्भ किये। विद्यालयों का उद्भव तथा उनकी स्थापना इन्ही प्रयासों का परिणाम है। इस प्रकार समाज जो उपयोगी एवं महत्वपूर्ण ज्ञान अपने बालकों को समुचित ढंग से नहीं दे पा रहा था उसने उसकी जिम्मेदारी अनुभवी विद्वानों को सौंप दी। इन विद्यालयों द्वारा बालकों को जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा उन्हे समुचित ढ़ंग से शिक्षा प्रदान करने हेतु जो ज्ञानराशि निश्चित एवं निर्धारित की गई तथा की जाती है उसे ही 'पाठ्यक्रम' का नाम दिया गया है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि पाठ्यक्रम अध्ययन का ही एक क्रम है, जिसके अनुसार चलकर विद्यार्थी अपना विकास करता है। अतः यदि शिक्षा की तुलना दौड़ से की जाए तो पाठ्यक्रम उस दौड़ के मैदान के समान है जिसे पार करके दौड़ने वाले अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुॅच जाते है।

भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में पाठ्यपुस्तकें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को उपलब्ध महत्वपूर्ण उपकरण है। पाठ्यपुस्तकें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुविधा जनक बनाती है तथा शिक्षार्थियों में सकारात्मक सोच एवं मूल्यों का प्रतिपादन करती है (एन.सी.ई.आर.टी. 1986, इवेल्यूएशन ऑफ टेक्सट बुक्स फ्रॉम दी स्टैन्डपाइंट ऑफ नेशनल इन्टीग्रेशन; गाईड लाइन्स नई दिल्ली)। आज भी दूरस्थ एवं पहुॅच विहीन क्षेत्रों में केवल पाठ्यपुस्तकें ही वह शैक्षिक साहित्य है जो शिक्षक की सहयोगी बनती है। शहरी घरों में भी मुश्किल से ही ऐसी कोई पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है जो विद्यार्थी को उसकी पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त कुछ और पढ़ने के लिए उपलब्ध करा सकें। इसमें कोई आश्चर्य नही है कि हमारे देश की शैक्षिक व्यवस्था मे पाठ्यपुस्तकों की स्थिति शिक्षक के बाद दूसरे नम्बर पर ही है (राव,आर.एस. 1986) ने अपनी पुस्तक ''करीकुलम मैथड एण्ड टेक्सट बुक्स–ए ट्रेण्ड रिपोर्ट'' में कहा कि चूंकि पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षक सहायक पुस्तकें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखती है अतः पाठ्यपुस्तकों एवं संबधित साहित्य के चयन एवं पुनरीक्षण को व्यवस्थित मूल्यांकन एवं शोध के आधार पर किया जाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तकों मे मूल्यों के समावेशन हेतु प्रारम्भिक शर्त उनकों पाठ्यचर्या में समावेशित करना है। इस संबंध में नई शिक्षा नीति के पश्चात राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2000 एवं 2005 द्वारा महत्वपूर्ण दिशा निर्धारित की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था पूरे देश के लिये एक राष्ट्रीय शिक्षाक्रम के ढाँचे पर आधारित होगी जिसमें एक ''सामान्य केन्द्र'' होगा और अन्य हिस्सों की बाबत लचीलापन रहेगा जिन्हे स्थानीय पर्यावरण तथा परिवेश के अनुसार ढाला जा

सकेगा। सामान्य केन्द्र में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास असंवैधानिक जिम्मेदारियों तथा राष्ट्रीय अस्मिता से संबंधित अनिवार्य तत्व शामिल होंगे। ये मुद्दे किसी एक विषय का हिस्सा न होकर लगभग सभी विषयों में पिरोये जायेंगे। इनके द्वारा राष्ट्रीय मूल्यों को हर व्यक्ति की सोच और जिंदगी का हिस्सा बनाने की कोशिश की जायेगी। इन राष्ट्रीय मूल्यों में ये बाते शामिल है। हमारी समाज सांस्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता स्त्री–पुरुष समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत। यह सुनिश्चित किया जायेगा कि सभी शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्षता के मूल्यों के अनुरूप ही आयोजित है। भारत ने विभिन्न देशों में शांति और आपसी भाईचारे के लिये सदा प्रयत्न किया है और ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के आदर्शो को संजोया हैं। इस परम्परा के अनुसार शिक्षा व्यवस्था का प्रयास यह होगा कि नयी पीढ़ी में विश्वव्यापी दृष्टिकोण सुदृढ़ हो तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की भावना बढ़े। शिक्षा के इस पहलू की उपेक्षा नही की जा सकती।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष 2000 में शिक्षकों से अपेक्षा की गई कि–➢वे मूल्य प्रबोधन के प्रति अपनी भूमिका को लेकर स्पष्ट दृष्टि रखे। ➢सार्वभौम एवं सर्वव्यापी मूल्यों के पोषण के लिये उन्हे विभिन्न विद्यालयी विषयों और स्थितियों की पहचान हो और वे बालकों के समक्ष नायक (रोल मॉडल) के रूप में स्वयं अपने प्रति संवेदनशील हो। ➢वे कक्षा में मूल्यशिक्षा की पढ़ाई और कक्षा संचालन के लिये उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये ईमानदारी से प्रत्यनशील रहे। ➢ वे अच्छे संप्रेषक या संदेशवाहक बने।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष 2005 में कहा गया कि शिक्षा के मूल सरोकार आज भी निसंदेह महत्व रखते है। ये है– बच्चों को इतना सक्षम बनाना कि वे अपने जीवन का अर्थ समझ सके अपने जीवन का एक उद्देश्य निश्चित करें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करे तथा दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा करने का अधिकार दे। यदि हमें कुछ करना है, तो वह है मनुष्यों की परस्पर निर्भरता को रेखांकित करना। शिक्षा को उन मूल्यों को प्रसारित करने में सक्षम होना चाहिए जो शांति मानवता, और सांस्कृतिक विविधता वाले समाज में सहिष्णुता को पोषित करे।'' राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष 2005 के अनुसार पाठ्यचर्या में संविधान में उल्लेखित मूल्यों; जैसे सामाजिक न्याय, समता एवं धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पाठ्यचर्या का अभ्यास कराना तथा ऐसे नागरिक वर्ग का निर्माण जो लोकतांत्रिक व्यवहारों, मूल्यों के प्रति कटिबद्ध हो, लैंगिक न्याय के प्रति, अनुसूचित जातियों–जनजातियों और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समस्याओं एवं आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील हो तथा उसमें राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता महत्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2000 एवं 2005 के उपरांत राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद तथा अन्य राज्य सरकारों के द्वारा पाठ्यचर्या में मूल्य शिक्षा के तत्वों के समावेशन हेतु निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। भाषा, सामाजिक विज्ञान यहां तक कि विज्ञान के विषयों में भी मूल्य तत्वों को समावेशित करने के लिये प्रयास जारी है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् एवं राज्य सरकारों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पाठ्यपुस्तकों का पाठ्यवस्तु विश्लेषण करना आवश्यक प्रतीत होता है। जिससे कि शिक्षाविद्वों द्वारा देश की प्रगति की दृष्टि से आवश्यक समझे गये मूल्यों का समावेशन स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. आल्टेकर (1975) एजूकेशन इन ऐन्शिएन्ट इंडिया, मनोहर प्रकाशन, वाराणसी, 2. अविनाश चन्द्रा (1977) करिकुलम डेवलप्मेंट एण्ड इवेल्यूशन इन एजूकेशन स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 3. एन.सी.ई.आर.टी. करिकुलम इन ट्रान्जेक्शन, 1978 नई दिल्ली, 4. बाजपेयी ए. (1990) एन एक्पेरेमेंटल स्टडी ऑफ एन एजूकेशन इंटलवेशन ए करिकुलम फाम वैल्यू डवलप्मेंट एण्ड इटस फेसिलिटेटिव इफेक्स अपॉन दी मॉरल जजमेंट ऑफ चिल्ड्रन भीमराव अम्बेडकर विश्वद्यिालय, लखनऊ, 5. भट्ट एस.आर. नॉलेज वैल्यू एण्ड एजूकेशन, ईलान पब्लिशयन हाउस, नई दिल्ली, 6. धांड, एच सन्सनवाल; डी.एन. एवं सिंह ए.के. (1995) वल्यू वेरीफिकेशन स्ट्रटीजिज़ इन इंडिया इंडिया एजूकेशन रिव्यू, 1973–1992, 7. गावन्डे ई.एन. (2002) वैल्यू ओरिएटेड एजूकेशन, नई दिल्ली, सरूप एण्ड सन्स, 8. गुप्ता एल.एन. (2002) ह्यूमन वैल्यू एन एजूकेशन, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, 9. लिण्डल, सी.एम. काक्स आर.सी. एण्ड बाल्डविन जे.डी. इवेल्यूएशन एन.ए. बवूल न करिकुलम डेवलप्मेंट, रैण्ड मैली 1970 10. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986, नई दिल्ली, 11. एन.सी.ई.आर.टी. 2002 एनोटेटेड बिब्लियोग्राफी ऑन वैल्यू एजूकेशन इन इंडिया, 12. एन.सी.ई.आर.टी. (1988) नेशनल करीकूलम फॉर एलीमेन्ट्री एण्ड सेकेण्ड्री एजूकेशन; ए फ्रेमवर्क, 13. एन.सी.ई.आर.टी. (1999) फण्डामेन्टल ड्यूटिज़ एण्ड वैल्यू ओरियेन्टेशन इन एन.सी.ई.आर.टी. करीकूलम एण्ड टेक्स बुक्स, 14. एन.सी.ई.आर.टी., आंध्रप्रदेश (1980½ ईवैल्यूएटिव स्टडी ऑफ टेक्सट बुक्स इन एनवायरेनमेन्टल स्टडीज ऑफ क्लास थ्री एण्ड फाईव बेस्ड ऑफ रिवाईस्ज़ करीकूलम इन साइंस। 15 राज्यसभा सेक्रेटेरियट, एटी फस्ट रिपोर्ट ऑन वल्यू बेस्ड एजूकेशन, (इंटरनेट पर उपलब्ध), 16. रूहेला एस.पी. (1986) ह्यूमन वैल्यूज एण्ड एजूकेशन नई दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, 17. शुक्ला एन (1990) करिकुलम डिजाईन फार वैल्यू ओरिएंटेड सेकेण्ड्री स्कूल टीचर एजूकेशन इन पंजाब, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 18 टावी डेविड, कुरिकुलम इवेल्यूशन टुडे, ट्रेन्डस एण्ड इप्लीकेशन, 1976 मैक्मिलन,